❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 45, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 दिसम्बर, 2021 से रविवार 19 दिसम्बर, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत

यू.पी.एस.सी. की उच्च सेवा परिक्षाओं - सिविल सर्विसेज आई.ए.एस./आई.पी.एस. की तैयारियों के लिए प्रतिबद्ध

आर्यसमाज के एकमात्र नि:शुल्क सेवा - संस्थान आर्य प्रतिभा विकास संस्थान ने आयोजित की

कोचिंग एवं छात्रवृत्ति हेतु हजारों आवेदकों में चयनित प्रतिभागियों की लिखित परीक्षा

सम्पूर्ण देश के 20 से अधिक राज्यों के परीक्षार्थी हुए सम्मिलित

हिन्दी के अलावा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों ने भी दी परीक्षा

(ऊपर) आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा से पूर्व आर्य नेताओं एवं नेत्रियों के सफलतम अनुभवी उद्बोधन श्रवण करते अभ्यर्थीगण। तथा (नीचे) विभिन्न राज्यों से पधारे छात्र-छात्राएं परीक्षा देते हुए।

आर्य समाज द्वारा गत कई वर्षों से भारत राष्ट्र के नवनिर्माण हेतु प्रतिभावान विद्यार्थियों को यूपीएससी की उच्च शिक्षा की प्रतियोगिता में सहभागी बनने हेतु नि:शुल्क कोचिंग, भोजन, आवास की सुविधा प्रदान की जा रही है। जिसके लगातार प्रशंसनीय परिणाम सामने आ रहे हैं। देश के कोने कोने से ऐसे मेधावी विद्यार्थी जो विशेष प्रतिभा तो रखते हैं लेकिन आर्थिक अभाव के कारण उच्च शिक्षा के अंतर्गत प्रायोजित परीक्षाओं में भाग लेने से वंचित रह जाते हैं। अत: आर्य समाज की पहल पर आज निर्धन परिवारों के होनहार बच्चे अपने सपनों को साकार कर रहे हैं, देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

गतवर्ष की तरह इस वर्ष भी 12 दिसंबर 2021 को रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजा बाजार, नई दिल्ली में आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा पूरे भारत से विद्यार्थियों के सहयोग हेतु लिखित प्रवेश परीक्षा आयोजित की गई।

जिसमें मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, छत्तीस गढ़, झारखंड, बिहार, त्रिपुरा, मणिपुर, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, पंजाब, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों से अनेक छात्र

- शेष पृष्ठ 4 पर

देशभर की आर्यसमाजों ने साप्ताहिक सत्संगों में नम आंखों के साथ शान्ति यज्ञ एवं शोभायात्रा के साथ दी श्रद्धांजलि

प्रथम चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, जनरल बिपिन रावत, उनकी धर्मपत्नी एवं 11 अन्य जांबाज सैनिकों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि

8 दिसम्बर 2021 को तमिलनाडु के नीलगिरी पहाड़ियों पर वायुसेना के एम. आई. हैलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण भारत के प्रथम चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ, जनरल बिपिन रावत जी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मधुलिका रावत जी एवं अन्य 11 जांबाज सैनिकों की शहादत के भयावह, दर्दनाक समाचार से सम्पूर्ण देश में शोक की लहर व्याप्त हो गई। इस अत्यंत दु:ख की घड़ी में दिल्ली की समस्त आर्य समाज और आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा गहरी शोक संवेदना व्यक्त करती है, इस अपार पीड़ा में सभी शहीदों के परिजनों को सहनशक्ति प्राप्त हो और दिवंगत शहीदों की पुण्यात्माओं को शांति सदगति की प्राप्ति हो, ईश्वर से ऐसी प्रार्थना करते हैं। इस अवसर पर गुरुकुल करतारपुर की ओर से तिरंगा यात्रा निकालकर जनरल बिपिन रावत एवं अन्य जवानों को श्रद्धांजलि दी गई।

देववाणी-संस्कृत

सच्चा अवलम्बन

वेद-स्वाध्याय

इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः।। *-ऋ. 1/57/4*
ऋषिः **सव्य आङ्गिरसः।।** देवताः **इन्द्रः।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ - प्रभूवसो = हे महान ऐश्वर्यवाले! **पुरुष्टुत = हे बहुतों से स्तुति किये जाने वाले! ये = जो हम गिर्वणः** = हे वाणियों से पूजनीय इन्द्र! **गिरः** = हमारी वाणियों को, प्रार्थनाओं को **त्वदन्यः** = तेरे **त्वा = तेरा ही आरभ्य** = अवलम्बन करके **चरामसि** = चलते हैं **ते इमे वयम्** = वे ये हम **इन्द्र = हे इन्द्र! ते** = तेरे हैं सिवाय और कोई **न हि सघत्** = नहीं प्राप्त करता, नहीं सुनता **नः तद् वचः** = अतः हमारी इन प्रार्थनाओं को **क्षोणीः इव** = पृथिवी की भांति **प्रतिहर्य** = प्रतिकामना करो, आकर्षित करो।

विनय- हे महान् ऐश्वर्यवाले प्रभो! हमने तेरा अवलम्बन ग्रहण कर लिया है। हमने देखा कि सब ज्ञानी तेरी ही स्तुति करते हैं, अतः हमने भी अब अन्य सब सहारे छोड़कर एक तेरा ही सहारा ले-लिया है। हम इस जगत् में अपना एक-एक व्यापार, एक-एक काम-काज तेरे ही भरोसे करते हैं और कोई हमें क्या कहेगा, क्या समझेगा, हमें इस कार्य के करने से क्या दुःख आएंगे, संसार हमारी कितनी निन्दा करेगा यह हम कुछ नहीं देखते। बस, तेरी इच्छा(आज्ञा) क्या है इसे यथाशक्ति जानकर इसे ही तेरे भरोसे करते जाते हैं, अतः हे इन्द्र प्रभो! अब हम तेरे हैं। तू हमारा है और हम तेरे हैं। संसार में अब कोई और हमारा नहीं है। हमारे सब सम्बन्धी, हमरे घनिष्ठ-से-घनिष्ठ मित्र, हमारा धन, हमारी बुद्धि, शरीर आदि किसी का भी हमें सहारा नहीं है। इनका जितना सहारा है वह सब तेरे द्वारा ही है। इसलिए हे हमारे स्वामिन्! हमारी प्रार्थनाएं तेरे सिवाय और किसके पास पहुंच सकती हैं? ऐसा संसार में और कौन है जिसके आगे हम विनती करेंगे? विनती करने की हीनता करेंगे? और किसी के आगे हम दीन नहीं बन सकते। इसलिए हे प्रार्थनाओं के सुनने वाले! हे वाणियों की पूजा ग्रहण करने वाले! हम जो प्रार्थनाएं तेरे चरणों में पहुंचा रहे हैं उन्हें तुम ही चाहो। तुम ही उन्हें अपनी ओर इस प्रकार खींचो जैसे यह विशाल भूमि अपनी आकर्षण-शक्ति से सब पार्थिव वस्तुओं को अपनी ओर खींचती रहती हैं। हम कोई वस्तु ऊपर या इधर-उधर किसी विरुद्ध दिशा में फेंके, तो भी वह वस्तु अन्त में खिंचकर पृथिवी के पास पहुंच जाती है। इसी प्रकार हे हमारे देव! हमारी प्रार्थनाओं में यदि कोई त्रुटि हो, इनमें आत्मसमर्पण की कमी होने के कारण ये प्रार्थनाएं ठीक तुम्हारी ओर जाने योग्य न हों, तो भी हे देव! इन्हें तुम अपनी ओर खींच लो। जब हम तुम्हारी कामना करते हैं तब तुम हमारी कामना न करो- यह कैसे हो सकता है? नहीं, तुम भी पृथिवी की भांति हमें खींच रहे हो। हम तो तुम्हारी ओर आ ही रहे हैं, अतः हमारी कामनाओं के पाने की तुम भी प्रतिकामना करो। हमारी प्रार्थनाओं को प्रतिग्रहण करो। तुम्हारे सिवाय अब हमारा और कोई नहीं रहा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

साऊदी अरब ने तब्लीगी जमात को क्यों कहा आतंक का दरवाजा?

एक बार फिर अब ये चर्चा गरम है। सऊदी अरब से, जब वहां सरकार की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि अब से शुक्रवार की नमाज के दौरान लोगों को तब्लीगी जमात से मिलने की जरूरत नहीं है। उनसे किसी भी तरह का संपर्क रखना जरूरी नहीं है। आदेश में आगे कहा गया है कि यह संगठन समाज के लिए खतरनांक है और देश में आतंकवाद का दरवाजा खोलने का दमखम रखता है। सिर्फ इतना ही नहीं सऊदी सरकार की ओर से मस्जिदों से तब्लीगी को लेकर लोगों को जागरूक करने की अपील की गई है। लोगों को यह बताने के लिए कहा गया है कि तब्लीगी जमात क्यों और कैसे समाज के लिए खतरा है। सरकार का मानना है कि तब्लीगी जमात के गलत कामों को लोगों तक पहुंचाया जाना चाहिए। लोगों को लगातार इसकी जानकारी दी जानी चाहिए।

ऐसे में सवाल खड़ा होता है कि जब इस्लाम अरब के खाड़ी देशों से भारत में आया तो तबलीगी जमात भारत से अरब क्या लेने पहुंची? अगर ये इस्लाम का हिस्सा है तो फिर ये करीब 100 साल पहले ही अस्तित्व में क्यों आया? इस सवाल का जवाब वर्तमान में शायद ही मिले, हाँ अगर सौ वर्ष पीछे जायें तो पूरा माजरा समझ आ जायेगा।

असल में शुद्धि का काम तो आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद जी के समय से प्रारंभ हो गया था। यानि ईसाई और मुस्लिम बने भारतियों की सनातन धर्म में पुनः वापसी के द्वार खुल गये थे। लेकिन 11 फरवरी 1923 को भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना करते समय आर्य समाज के नेता स्वामी श्रदानन्द द्वारा इस भारत में एक बड़ा अभियान खड़ा कर दिया। इसका आरम्भ पंजाब से किया गया जिसमें सबसे पहले मेघ, ओड और रहतिये जैसे निम्न और पिछड़ी समझी जाने वाली जातियों का शुद्धिकरण किया गया। इसके बाद आगरा और मथुरा के समीप मलकाने राजपूतों का निवास था जिनके पूर्वज एक-आध शताब्दी पहले ही इस्लाम में गये थे। हालाँकि मलकानों के रीती रिवाज़ अधिकतर हिन्दू थे और चौहान, राठोड़ आदि गोत्र के नाम से जाने जाते थे। बहुत जल्द करीब 30 हजार मलकानों की शुद्धि कर घर वापिसी करा दी गयी। जैसे ही खबर अख़बारों में छपी तो लाहौर, पेशावर जो उस समय भारत के हिस्से थे, वहां भी बड़े स्तर पर लाखों की संख्या में घर वापिसी आरम्भ हो गयी।

अब मुसलमानों में इस आंदोलन के विरुद्ध भगदड़ मच गयी। जमायत-उल-उलेमा ने मुम्बई में 18 मार्च, 1923 को मीटिंग कर स्वामी श्रद्धानन्द एवं शुद्धि आंदोलन की आलोचना कर निंदा प्रस्ताव पारित किया। लेकिन इसी बीच स्वामी श्रद्धानंद जी को ख्वाजा हसन निज़ामी द्वारा लिखी एक पुस्तक 'दाइए-इस्लाम' हाथ लग गयी। इस पुस्तक को चोरी-छिपे केवल मुसलमानों में उपलब्ध करवाया गया था। इस पुस्तक में मुसलमानों को हर अच्छे-बुरे तरीके से हिन्दुओं को मुस्लमान बनाने की अपील निकाली गई थी। हिन्दुओं के घर-मुहल्लों में जाकर औरतों को चूड़ी बेचने से, वैश्याओं को ग्राहकों में, नाई द्वारा बाल काटते हुए इस्लाम का प्रचार करने एवं मुस्लमान बनाने के लिए कहा गया था। विशेष रूप से 6 करोड़ दलितों को मुसलमान बनाने के लिए कहा गया था जिससे मुसलमान जनसँख्या में हिन्दुओं की बराबर हो जाये और उससे राजनैतिक अधिकारों की अधिक माँग की जा सके। ये सब पढ़कर स्वामी श्रद्धानंद जी का माथा चकरा गया। अब स्वामी जी ने निज़ामी की पुस्तक अनुवाद कर नाम दिया "हिन्दुओं सावधान, तुम्हारे धर्म दुर्ग पर रात्रि में छिपकर धावा बोला गया हैं।" फिर इस किताब का उत्तर देते "अलार्म बेल अर्थात खतरे का घंटा" के नाम से किताब प्रकाशित की आप इस किताब को पढ़ेंगे तो जानेंगें कि जो कुछ स्वामी श्रद्धानंद जी ने सौ साल पहले लिखा था आज वही सब हो रहा है।

साऊदी अरब के इस्लामिक मामले मन्त्री डॉ. अब्दुल्लतिफ अल-अलशेख मस्जिदों को तब्लीगी जमात के सम्बन्ध में जारी किए निर्देश

जब इस्लाम के जन्मस्थान साउदी अरब में तब्लीग जमात को आतंक का एक दवाजा और पथभ्रष्ट लोगों का समूह बताकर बैन कर दिया है तो भारत में ऐसा क्यों नहीं किया जाना चाहिए? आखिर भारत कब उठाया ऐसा कदम?

बहराल 1925 तक शुद्धि आन्दोलन एक चिंगारी से शोला बन गया। मुस्लिम इससे नाराज थे क्योंकि उनकी संख्या कम होती जा रही थी। इस आग में ओर घी डालते हुए 29 मई 1925 में ही गाँधी जी ने भी यंग इंडिया के एक अंक में हिन्दू मुस्लिम-तनाव : कारण और निवारण' शीर्षक से एक लेख में स्वामी श्रद्धानंद जी पर कई आरोप लगा दिए। दूसरी ओर मुस्लिमों के पास अब सिर्फ एक चारा बचा था और वह यह था कि हर एक मुस्लिम को घर-घर जाकर समझाया जाये। उन्हें 'जन्नत की हूर का लालच' दिया जाये और जहान्नुम की आग से डराया जाये। हिन्दू पहनावे रीति-रिवाजों से दूर किया जाये। इसके चलते ही साल 1926 में जमात की नींव रखी गयी। नाम दिया "तब्लीगी जमात" तब्लीगी यानि कुरान, हदीस की बात दूसरों तक पहुंचाना और जमात का मतलब समूह या ग्रुप।

शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

कैसे बनें आदर्श विद्यार्थी ?

जीवन का प्रथम भाग प्रायः पच्चीस वर्ष की अवस्था तक विद्योपार्जन का काल है। विद्याध्ययन करने का यह स्वर्णिम काल है। भविष्य का श्रेष्ठ नागरिक बनने की क्षमता और सामर्थ्य अर्जित करने की बेला है। अतः विद्यार्थी को **"विद्यारूपी अमृत के रस का आनन्द लेने के लिए, (विद्ययाऽमृतमश्नुते) आदर्श विद्यार्थी बनना होगा।** आदर्श विद्यार्थी उत्तम विचारों का संचय करेगा, क्षुद्र स्वार्थों और दुराग्रहों से मुक्त रहेगा। मन-वचन- कर्म में एकता स्थापित कर जीवन के सत्यरूप को स्वीकार करेगा।

विद्यार्थी का लक्ष्य है-विद्या प्राप्ति। विद्या-प्राप्ति के माध्यम हैं-आचार्य, गुरुजन या शिक्षक। इनसे विद्या-प्राप्ति के तीन उपाय हैं- नम्रता, जिज्ञासा और सेवा। प्रायः कहा जहा है - "जिनमें नम्रता नहीं आती, वे विद्या का पूरा सदुपयोग नहीं कर सकते।" सन्त तुलसीदास ने इसी बात का समर्थन करते हुए कहा है-**'यथा नवहिं बुध विद्या पाए।'** नम्रता समस्त सद्गुणों की जननी है। विनम्र और सुपात्र छात्र में गुरु अपना प्रतिबिम्ब देखता है और अपनी समस्त ज्ञान की पूंजी प्रयास पूर्वक उसमें हस्तान्तरित करने में जुट जाता है।

जिज्ञासा तीव्र बुद्धि का स्थायी और निश्चित गुण है। जिज्ञासा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता। पाठ्य-पुस्तकों, सद् साहित्य और सामान्य-ज्ञान के प्रति जिज्ञासा-भाव विद्यार्थी को विस्तृत और गहन अध्ययन की ओर प्रेरित करता है। **जिज्ञासा एकाग्रता की सखी है।** अध्ययन के समय विषय को समझने और हृदयंगम करने के लिए चित्त को एकाग्र करना अनिवार्य गुण है।

'सेवा से मेवा मिलता है।' No gain without pain. यह उक्ति सुप्रसिद्ध है। गुरुजनों के आदेश का सहर्ष पालन कर, उनके सतत् सामीप्य और सेवा से आयु-विद्या-यश और बल की प्राप्ति की जा सकती है।

अभिवादनशीलस्य........यशो बलम्।

सेवा से विमुख विद्यार्थी गुरु का कृपापात्र नहीं बन सकता। इसीलिए कहा गया है-

'गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा।'

अर्थात् विद्या गुरु की सेवा से या गुरु को पर्याप्त धन देकर अर्जित की जा सकती है।

संयमित आचरण विद्यार्थी का अनिवार्य गुण है। मुख्यतः खाने, खेलने और सोने में पूर्णतः संयम बरतना चाहिए। अल्पाहार और श्वान-निद्रा से सजगता और अप्रमाद बना रहता है। स्फूर्तिवान शरीर अधिक परिश्रम और स्वाध्याय करने में सहायक होता है। चाणक्य समझाते हैं-

अलसस्य कुतो विद्या?
विद्यार्थिनः कुतो सुखम्?
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्याम्
विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।

सुख की चाह-विद्यार्जन में सबसे बड़ी बाधा है। Hard work is the key to success.

समय का सदुपयोग एक-एक क्षण की भी संभाल करना, अधिकाधिक स्वाध्याय करना। व्यर्थ की गप्पे हाँकने में निरुद्देश्य घूमने-फिरने, सिनेमा देखने, नायक नायिकाओं की चर्चा, पर निन्दा-स्तुति में अपना अमूल्य समय नष्ट नहीं करना योग्य विद्यार्थी का गुण है। कहा गया है-**क्षणे नष्टे कुतो विद्या?**

शेक्सपीयर ने भी लिखा है - "If you kill the time, time doeth kill you"

अतः विद्यार्थी अपने हाथों अपना विनाश न करें क्योंकि बीता समय फिर कभी वापिस नहीं आता।

सादा जीवन उच्च विचार,
यही है जीवन का श्रृंगार।

Simple Living and high thinking के सिद्धान्त का पालन विद्यार्थी के लिए अत्यन्त हितकारी है। बाह्य साज-सज्जा फैशनेबल वस्त्र आदि के चक्कर में न पड़कर विद्यार्थी को सद्गुणों को धारण करने व शरीर को बलिष्ठ तथा स्वस्थ रखने का प्रयास करना चाहिए। आन्तरिक गुणों की सौरभ व सदाचरण की आभा से दमकता मुख-मण्डल वास्तविक सौन्दर्य है।

सुन्दरता पर कभी न झूलो
शाप बनेगी वह जीवन में
लक्ष्य विमुख कर भटकाएगी
तुम्हें व्यर्थ के आडम्बर में।

फैशनपरस्ती में मन के विचार कलुषित होकर लक्ष्य भ्रष्ट कर देते हैं।

पाठ्योत्तर क्रियाओं में सक्रिय भाग लेकर सामाजिक विकास भी विद्यार्थी के व्यक्तित्व के निखार में सहयोगी होता है।

साहित्यिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर भाषण, वादविवाद, कविता, गीत-संगीत, नृत्य, अभिनय द्वारा अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके प्राप्त प्रशंसा व सम्मान से आत्मविश्वास में अभिवृद्धि तथा आनन्द प्राप्ति विद्यार्थी के जीवन को उत्कर्ष की ओर अग्रसर करती है। गर्ल गाइडिंग स्काउटिंग, खेलकूद, मैच, समाज-सेवा, श्रमदान आदि में विद्यार्थियों को बढ़ चढ़कर भाग लेना चाहिए। इससे उनमें नेतृत्व, वक्तृत्व की कलाएं विकसित होंगी-जो भावी जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगी।

दायित्व : भारत की आन्तरिक स्थिति वर्तमान में विचारणीय है और विश्व का वातावरण भी इसके प्रतिकूल है। यहां कानून और व्यवस्था चौराहे पर औंधे मुंह पड़े सिसक रहे हैं। सारे देश में हिंसा, तनाव एवं आतंक का साम्राज्य है। साम्प्रदायिक एवं विघटनकारी शक्तियां देश के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। मंहगाई की मार इतनी जबरदस्त है कि वह भारतीय जीवन को नंगा-भूखा बनाने पर तुली है। राष्ट्रीय दल स्वार्थ के पंक से उबर नहीं पाते।

अर्थतन्त्र चरमरा रहा है। राष्ट्रीय चरित्र तथा नैतिक मूल्य कहीं पाताल में छुपे बैठे हैं। इन विषम परिस्थितियों में विद्यार्थी का कर्त्तव्य क्या हो सकता है?

विद्याध्ययन का कार्य निर्बाध गति से चलता रहे-यही विद्यार्थी का प्रथम कर्त्तव्य है। विद्यार्थी विद्या के निमित्त स्वयं को समर्पित समझे। एकाग्रचित्त होकर अधिक से अधिक अंक प्राप्ति के लिए निरन्तर अध्यवसाय करें। राजनीतिज्ञों, नव धनाढ्यों, तस्करों असामाजिक तत्त्वों से दूर ही रहे, इसी में उसका हित है। प्रदर्शनों, हड़तालों, नारेबाजी, तोड़फोड़ से अपने को अलग रखें। अपने सहपाठियों में जातिवाद, वर्गवाद, प्रान्तवाद तथा साम्प्रदायवाद की दुर्गन्ध को न फैलने दें। भाईचारे की सुगन्ध से परिवेश को खुशहाल बनाएं।

विद्यार्थी अपनी 'आत्मशक्ति की पहचान' बढ़ाकर राष्ट्रनिर्माण के पुण्यकार्य में जुड़े। महादेवी वर्मा विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहती हैं-**"यदि आप अपनी सारी शक्तियों (शारीरिक, आत्मिक) को, अपनी आस्था को, अपने विश्वास को अपने में समेट लें और देखें तो पायेंगे कि आपके पास वो शक्ति है जिससे प्रलय के बादल छंट जाएंगे। मार्ग की जितनी बाधाएं हैं-वे हट जाएंगी।"** इसलिए अपने अन्दर शैक्षणिक योग्यता, राष्ट्रप्रेम, आत्मशक्ति, जीवन मूल्यों में आस्था, सौन्दर्यबोध से प्रेम तथा सामाजिक कृत्यों द्वारा राष्ट्रनिर्माण के पुण्यकार्य में विद्यार्थी अपनी भूमिका निभा सकता है।

देश के छात्र स्वस्थ हों, सुन्दर हों, उदार हों, सन्तुलित बुद्धि वाले हों, सुशिक्षित तथा उत्साहित हों तो वे परिवार, समाज तथा देश का कौन-सा संकट दूर नहीं कर सकते? वे अपने कार्यों से भविष्य के खेतों में ऐसे फल-फूल उगा सकते हैं-जो आगामी सदियों तक राष्ट्र के जीवन को स्वस्थ, सुन्दर और सुवासित बनाए रखेंगे।

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
कोरोना एवं श्वास सम्बन्धी
मरीजों के लिए उपयोगी
ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर
निःशुल्क उपलब्ध
इच्छुक व्यक्ति
आर्य समाज की वेबसाइट
पर आवेदन करें
www.thearyasamaj.org
+91 9311 721 172

प्रथम पृष्ठ का शेष

कोचिंग एवं छात्रवृत्ति के लिए 17000 आवेदकों में चयनित 200 प्रतिभागियों लिखित परीक्षा......

उपस्थित हुए और सब प्रतिभागियों ने पूरी निष्ठा से लिखित परीक्षा में भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठ आर्य नेताओं ने उपस्थित विद्यार्थियों को आशीर्वाद और शुभकामनाएं प्रदान की। समस्त गणमान्य महानुभावों में श्री सत्यानंद आर्य, प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर, श्री राज कुमार, अध्यक्ष सुशील राज आर्य प्रतिभा विकास केंद्र, श्री जोगेदर खट्टर, महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रमसंघ, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, उप प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री संजय कुमार, प्रबन्धक, रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल, श्री सतीश चड्ढा, महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, श्री जितेंद्र गुप्ता, मेट्रोपॉलिटन जज, श्री मनीष भाटिया, सलाहकार सदस्य आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, श्री अजय कालरा, सलाहकार सदस्य आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, श्री अजय भाटिया एवं श्री प्रवीण कुमार, अतिरिक्त न्यायाधीश इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की परियोजना के अनुसार लाभार्थियों की सफलता की सभी आर्य नेता, अधिकारियों ने उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा की और भविष्य में इस महान

सेवा प्रकल्प के अन्तर्गत राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा के प्रयासों की सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

अपने अध्यक्षीय व्यक्तव में श्री राजकुमार जी ने कहा कि प्रशासनिक सेवाओं के तैयारी लिए बेहतर सुविधा उपलब्ध कराना और शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास ही आर्य प्रतिभा विकास संस्थान, हरिनगर, दिल्ली इकाई का मुख्य लक्ष्य है। इसके लिए विगत चार वर्षों से आर्य समाज के नि:स्वार्थ सहयोग से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्वावधान में सिविल सेवा परीक्षार्थियों को परीक्षा की पूरी तैयारी कराने के लिए नि:शुल्क सेवा प्रदान की जा रही है

उन्होंने आगे कहा कि आर्यसमाज द्वारा मानव सेवा के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अगले वर्षों में इस संस्थान को और वृहद् रूप से संचालित करने व संस्थान से से-अधिक अधिक अभ्यर्थियों को जोड़कर लाभान्वित करने का आश्वासन दिया। सभी परीक्षार्थी आशा उत्साह से भरपूर दिखाई दे रहे थे, सभी परीक्षा के उपरांत अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर गए, अब इन परीक्षाओं के परिणाम के अनुसार विद्यार्थियों का चयन करके आर्य प्रतिभा विकास संस्थान आगामी वर्षों के लिए इस अनुपम सेवा अभियान को गति प्रदान करेगा।

आर्यसमाज एवं आर्य गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम नोएडा का दोदिवसीय वार्षिक उत्सव सम्पन्न

वेद मार्ग पर चलकर जीवन सुखमय बन सकता है - विनय आर्य, महामन्त्री दिल्ली सभा

आर्यसमाज नोएडा एवं आर्य गुरुकुल वानप्रस्थ आश्रम नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव दिनांक 04 व 05 दिसम्बर को सहर्ष संपन्न हुआ। 4 दिसम्बर 2021 को प्रात: 8:30 बजे से 09:30 बजे तक आचार्य जयेंद्र जी के ब्रह्मत्व में गायत्री महायज्ञ किया गया। आर्य संस्कृति रक्षा एवं सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन 10 बजे से 12:30 बजे तक चला जिसकी अध्यक्षता डॉ. वेदपाल जी प्रधान परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा की गई।

गुरुकुल विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रो. डा. धर्मेन्द्र शास्त्री जी ने मुख्य वक्ता के रूप में आर्य संस्कृति रक्षा पर अपना चिन्तन और सत्यार्थ प्रकाश के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री भानु प्रकाश शास्त्री द्वारा भजनों का श्रवण कराया गया। संयोजन आचार्य डा. जयेन्द्र द्वारा किया गया। इस अवसर पर महिला सम्मेलन का आयोजन भी किया गया। सांय को भजन संध्या विधिवत संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. विक्रम सिंह-अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी द्वारा की गई। कार्यक्रम के मुख्य नोएडा के लोकप्रिय विधायक माननीय श्री पंकज सिंह जी ने वेद के विचारों से ईमानदारी एवं श्रेष्ठता और सत्य मार्ग पर चलने की बात कही। अति विशिष्ट अतिथि श्री आनन्द कुमार पूर्व (आई.पी.एस) द्वारा सभी वेद मार्ग सुगम है का उपदेश किया।

विशिष्ट अतिथि श्री विनय आर्य (महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) द्वारा वेद मार्ग पर चलकर जीवन सुखमय बन सकता है का उपदेश दिया गया। डा. डी. के गर्ग (ईशान आयुर्वेद संस्थान) ने बताया कि वेदमंत्रों द्वारा यज्ञ करने से समस्त संसार शान्ति और सुख फैलता है बताया। मुख्यवक्ता डा. वेदपाल जी द्वारा वेदों का मार्मिक चिन्तन प्रस्तुत किया। जिससे ज्ञात हुआ कि वेद ही ज्ञान का समुद्र हैं। डॉ. धमेन्द्र शास्त्री जी द्वारा वेद की मान्यतायें एवं समाज और राष्ट्र के उत्थान में वेद में बताये गये मार्ग पर प्रकाश डाला। श्री कर्णसिंह शास्त्री जी द्वारा वेद से जीवन का निर्माण कैसे हो पर प्रकाश डाला। भजनोपदेशक श्री भानुप्रकाश शास्त्री जी ने अपनों भजनों के माध्यम से वेद का सुन्दर उपदेश दिया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्रधान श्री शैलन जगियानी द्वारा सभी का धन्यवाद किया। *- मन्त्री*

आर्यसमाज नोएडा एवं आर्य गुरुकुल वानप्रस्थाश्रम के वार्षिकोत्सव समारोह के अवसर पर उद्बोधन देते वैदिक विद्वान डॉ. वेद पाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, मचंस्थ अतिथि एवं अधिकारीगण तथा उपस्थित आर्यजन एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों से भरा आर्यसमाज का हॉल

महर्षि दयानन्द के अनन्य सिपाही, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, उद्योगपति, टंकारा ट्रस्ट के कार्यकारी प्रधान श्री योगेश मुंजाल जी रविन्द्रनाथ टैगारे विश्वविद्यालय द्वारा डाक्ट्रैट की उपाधि से अलंकृत

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं कार्यकारी प्रधान श्री योगेश मुंजाल जी सुपुत्र स्व. महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जोकि एक सुप्रसिद्ध उद्योग प्रबन्धक एंव गुरूग्राम इण्डस्ट्री एसोसिएशन के पूर्व प्रधान एवं मुंजाल शोवा लिमिटेड के प्रबन्ध निदेशक हैं, को रविन्द्र नाथ टैगोर यूनिवर्सिटी द्वारा डाक्ट्रैट की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।

विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल द्वारा श्री मुंजाल जी को डाक्ट्रैट की उपाधि से विभूषित किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल जी द्वारा श्री योगेश मुंजाल को सामाजिक औद्योगिक एवं अर्थ व्यवस्था में किए गए कार्यो की सराहना करते हुए कहा कि आपकी उपलब्धियाँ केवल मात्र आपका आर्य समाज और वैदिक मान्यताओं से जुड़े होने एवं अपने माता पिता द्वारा दिए गए संस्कारों के कारण ही है।

आप आई.आई.टी. रूड़की के स्नातक हैं। औद्यागिक उपलब्धियों के साथ साथ आप रोटरी क्लब, सीआईआई, क्वालिटी सर्किल, फोरम ऑफ इण्डिया, एआईएमए, इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, एसोसियेशन ऑफ नीट, डी.ए.वी कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/ट्रस्ट, वैदिक साधन आश्रम देहरादून, महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा आदि सामाजिक एवं राष्ट्रीय संस्थानों से जुड़े हुए हैं।

बढ़ता तनाव चिन्ता का विषय : स्वाध्याय से शरीर, मन, बुद्धि को शुद्ध और संतुलित करना होगा – धर्मपाल आर्य

12 दिसम्बर 2021, आर्य समाज वसंत कुंज द्वारा आर्य मिलन समारोह का आयोजन सहर्ष संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने विशेष संबोधन में उपस्थित आर्यजनों को तनाव मुक्ति के लिए योग एवं वैदिक ज्ञान धारा के विषय में विस्तार से संदेश दिया। उन्होंने बताया कि आधुनिक परिवेश में बढ़ता तनाव बहुत ही बड़ी चिन्ता का विषय है, इस प्रकोप से बचने के लिए हमें जहां अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित करना होगा वहीं अपने योगदर्शन आदि ग्रन्थों से सही शिक्षाएं अर्जित करके अपने शरीर, मन और बुद्धि को शुद्ध और संतुलित करना होगा। अपने मन को आशा, उत्साह, उमंग और उल्लास से परिपूर्ण करने के लिए वैचारिक साधना भी जरूरी है। इसके लिए वेदों का स्वाध्याय अवश्य करें। वैसे तो यह कार्यक्रम विशेष रूप से युवाओं के लिए आयोजित किया गया था लेकिन हर आयुवर्ग के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। आर्य समाज बसन्त कुंज के अधिकारियों ने प्रधान जी के इस विशेष वक्तव्य के हार्दिक धन्यवाद किया और शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– कर्नल बक्शी, प्रधान

उ. दिल्ली नगर निगम द्वारा 'महर्षि दयान्द वाटिका' का लोकार्पण

दिनांक 4 दिसबर, 2021 को आर्यसमाज वेद मन्दिर सी.पी. ब्लाक मौर्य एन्कलेव पीतमपुरा के सद्प्रयासों से दिल्ली नगर निगम द्वारा के.पी. ब्लाक स्थित पार्क नं. 17 का नामकरण महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के नाम पर महर्षि दयानन्द वाटिका रखा गया। इस पार्क का उद्घाटन पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं सासद डॉ. हर्षवर्धन जी के कर-कमलों से किया गया। इस अवसर पर दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता एवं महापौर सरदार राजा इकबाल सिंह सहित आर्यसमाज के अधिकारियों के साथ-साथ उ.पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के अधिकारीगण भी उपस्थित रहे। इस कार्य के लिए आर्यसमाज एवं दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

आर्य समाज आनन्द विहार, एल ब्लाक हरि नगर का त्रिदिवसीय वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज एल ब्लाक हरि नगर का वार्षिक उत्सव दिनांक 26 नवंबर से 28 नवंबर तक मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. हरिदेव आर्य के प्रेरणादायक प्रवचन एवं श्रीमती सुदेश आर्या के सुमधुर भजन तथा दर्शनाचार्य विमलेश बंसल जी के सारगर्भित उपदेश हुए। इस अवसर पर आर्य संदेश टीवी पर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण भी किया गया। समाज के मंत्री श्री महेंद्र सिंह ने आर्य मीडिया सेंटर द्वारा कार्यक्रम को लाइव प्रसारित करने का धन्यवाद देते हुए लोगों से अपील की कि आर्य संदेश टीवी को देखने हेतु अपने मोबाइल में या एंड्राइड टीवी में यूट्यूब पर आर्य संदेश टीवी को सब्सक्राइब करें। इस अवसर पर दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने अपने उद्बोधन में गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम् के ब्रह्मचारियों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम को देखा और संस्कृत के विषय में उपस्थित जनसमूह को बताया। सभा के उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान, मंत्री श्री सुखबीर आर्य तथा केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश आर्य ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा श्री यशपाल आर्य ने अपनी शक्ति बढ़ाने का आह्वान किया और बताया कि आने वाला समय बहुत कठिन है।

– महेंद्र सिंह, मन्त्री

कोरोना काल में सेवा करने वाले आर्यवीरों का सम्मान

आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली में दिनांक 5 दिसम्बर को आयोजित एक कार्यक्रम में कोरोना काल में सेवा कार्य करने वाले 25 आर्यवीरों एवं आर्य वीरांगनाओं का विशेष सम्मान किया गया। इस अवसर पर उन्हें ट्रैकसूट पुरस्कार स्वरूप भेंट किए गए। इस पुरस्कार कार्य में श्री वीरसेन मुखी जी एवं श्री दयानन्द टांगरा जी का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सभी आयुवर्ग को देखते हुए विशेष उद्बोधन दिया। *– विनित बहल, मन्त्री*

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

Some Golden Sayings of Swami Dayanand

Swami Dayanand delivered many speeches and wrote many books. In all these he expressed many noble thoughts. Since it is no possible to give a summary of all that he said or wrote, we shall only give some of his npble sayings. In reading them everyone would find how true and noble they are. But they should not merely be read; they should also be acted upon.

1. God is one. He alone should be worshipped, and none else.
2. God always protects him who speaks the truth.
3. Always fear God. If you do so, you need not be afraid of anybody else.
4. The Vedas are books which are full oftrue knowledge. It is the duty of every good man to study them.
5. Knowledge is wealth that thieves cannot steal.
6. We should not think only of our own good, but we also should try to think of the welfare of others.
7. My body is perishable and can be cut into pieces, but I have yet to find that bold man who will destroy my soul. Under these circumstance, I am not prepared to sacrifice truth.
8. He alone is wise who knows how to distinguish the true from the false, and is always ready to accept what is true.
9. Some people regard their own weak points as strong points, and other people's strong points as weak points. This is something one cannot understand. It should be remembered that virtue remains virtue and vice vice under all circumstances.
10. A person is not good merely because he is the near relative of a rich man. He alone is good who does good things. Such a man deserves everybody's regard.
11. He who does not work hard remains always poor. Wealth has always been the fruit oflabour.
12. He who does evil things becomes evil-minded. This type of man is the greatest foe to his own prosperity.
13. If we drink wine, we invite disease.
14. People say to me, "Do not speak the truth. The collector will be annoyed with you, and the deputy commissioner will be angry with you." But even if I were tied to the mouth of a cannon I would speak the truth, only the truth and nothing but the truth.
15. Truth always conquers and falsehood is always defeated in the end.
16. We should follow in the footsteps of our parents unless they have not led a good life.
17. It is the duty of parents to educate their children. They should never get them married unless they are grown up.
18. I was not born to put people in fetters, but I live to free them from the fetters of ignorance.
19. He alone is great who is prepared to speak the truth at all times and at all places.
20. Do not injure anybody's feelings, otherwise you will come to grief.
21. I was born in India and have lived here all my life. Still I do not want to be in any way partial to its people. I describe as wrong what is wrong in them and as good what is good in them. In the same way, I try to be fair to foreigners. I praise their good points, but have no quarter for their weak points. In had been a prejudiced person I would have tried to praise my own people at all costs, but such a thing is not worthy of man.
22. The cow is the best of all animals, because it yields milk. Her not only bui lds up our body but also improves our brain-power. Indians should, therefore, protect her against all harm. If cows are not preserved, I am sure India will come to grief.
23. Try to understand a thing as it is and describe it as it is. Never do a thing which is not approved by your conscience.

People say to me, "Do not speak the truth. The collector will be annoyed with you, and the deputy commissioner will be angry with you." But even if I were tied to the mouth of a cannon I would speak the truth, only the truth and nothing but the truth. Truth always conquers and falsehood is always defeated in the end. We should follow in the footsteps of our parents unless they have not led a good life.

To be continued......
With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

प्रेरक प्रसंग

लोग क्या कहेंगे?

1967 ई. की बात होगी। बिहार में भयंकर दुष्काल पड़ा। देशभर से अकाल-पीड़ितों की सहायता के लिए अन्न भेजा गया। उन दिनों हम परिवार सहित दयानन्द मठ दीनानगर की यात्रा को गये। एक दिन श्री स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने कहा, आप पठानकोट आर्यसमाज के सत्संग में हो आवें और केरल में वैदिक धर्म के प्रचार व शुद्धि के लिए उनसे सहयोग करने को कहें।

उस वर्ष मठ की भूमि में आलू की खेती अच्छी हुई थी। मोटे वा अच्छे आलू तो काम में लाये गये। छोटे रसोई के पास पड़े थे।

हम लौटकर आये तो पता चला कि मठ में कुछ ब्रह्मचारियों ने स्वामी श्री सर्वानन्दजी से कहा, ''आलुओं का यह ढेर बाहर फेंक दें? इसे क्या करना है?''

श्री स्वामीजी ने इसपर कहा, ''देखो! बिहार में दुष्काल से लोग मर रहे हैं। वहाँ खाने को कुछ भी नहीं मिल रहा। ये आलू खराब तो हैं नहीं, न ये सड़े-गले हैं। केवल छोटे ही हैं। देश के अन्नसंकट को ध्यान में रखकर हमें इन्हें फेंकना नहीं चाहिए। इनका सदुपयोग करना चाहिए। उबालकर इनका सेवन किया जा सकता है। यदि हम इन्हें फेंकेंगे तो लोग हमें क्या कहेंगे कि आश्रम के साधु ब्रह्मचारी कैसे व्यक्ति हैं?''

इन पंक्तियों के लेखक की धर्मपत्नी ने स्वामीजी तथा ब्रह्मचारियों का यह सारा वार्तालाप सुना।

देश, धर्म व जातिसेवा में एक-एक श्वास देनेवाले एक संन्यासी के हृदय में दूसरों के लिए कितना ध्यान है, यह घटना उसका एक उदाहरण है। सच तो यह है कि संसार में धर्म की प्रतिष्ठा इन्हीं तपस्वियों के कारण है। अपने व अपने परिवार के लिए तो सब जीते हैं, धन्य हैं वे लोग जो संसार के लिए जीते हैं। पराई पीड़ को अपनी पीड़ा माननेवाले इन महापुरुषों का ऋण कौन चुका सकता है? पराई आग में जलनेवाले इन पुण्य-आत्माओं के कारण ही ऋषिवर दयानन्द का मिशन फैला है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

संस्कृत वाक्य प्रबोध

वनस्थपक्षिप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	**हिन्दी**
581. कदाचित् सारसावप्युड्डीयमानौ क्रीडन्तौ महाशब्दं कुरुतः।	कभी सारस पक्षी भी उड़ते और क्रीड़ा करते हुए बड़े शब्द करते हैं।
582. श्येनेनातिवेगेन वर्तिका हता।	बाज ने बड़े वेग से बटेर मारी।
583. शृणु, तित्तिरयः कीदृशं मधुरं नदन्ति!	सुन, तित्तिरः किस प्रकार मधुर बोलते हैं!
584. वसन्ते पिकाः प्रियं कूजन्ति।	वसन्तऋतु में कोयल प्रिय शब्द करती हैं।
585. काककोकिलवद् दुर्वचाः सुवाक् च मनुष्यो भवति।	कौवे और कोयल के सदृश दुष्ट और अच्छा बोलनेवाला मनुष्य होता है।
586. अयं देवदत्तो हंसगतिं गच्छति।	यह देवदत्त हंस के समान चलता है।
587. पश्येमे मयूरा नृत्यन्ति।	देख, ये मोर नाचते हैं।
588. उलूका रात्रौ विचरन्ति।	उल्लू रात को विचरते हैं।
589. पश्य, बकः सरस्सु पाखण्डिजनवन्मत्स्यान् हन्तुं कथं ध्यायति?	देख, बगुला तालाबों में पाखण्डी मनुष्य के तुल्य मछली मारने को किस प्रकार ध्यान कर रहा है?
590. बलाका अप्येवमेव जलजन्तून् घ्नन्ति।	बगुला भी इसी प्रकार जलजन्तुओं को मारती हैं।
591. पश्य, कथञ्चचकोरा धावन्ति?	देख, किस प्रकार चकोर दौड़ते हैं?
592. येऽत्यूर्ध्वमाकाशे गत्वा मांसाय निपतन्ति ते गृधस्त्वया दृष्टा न वा?	जो बहुत ऊपर आकाश में जाकर मांस के लिये गिरते हैं वे गीध तूने देखे हैं वा नहीं?
593. मेनका मनुष्यवद्वदन्ति।	मैना मनुष्य के समान बोलती हैं।
594. चिल्लिका माणवकहस्ताद्रोटिकां छित्त्वोड्डीयते।	चील लड़के के हाथ से रोटी छीनकर उड़ जाती है।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

परोपकारिणी सभा के नव निर्वाचित अधिकारियों का स्वागत एवं सम्मान समारोह

प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य जी एवं मन्त्री मुनि श्री सत्यजित आर्य जी का शाल एवं स्मृति चिह्न से किया सम्मान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य केंद्रीय सभा, दिल्ली राज्य के संयुक्त तत्वाधान में, महर्षि दयानंद सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के यशस्वी प्रधान श्री सत्यानंद आर्य जी तथा महामंत्री मुनि सत्यजित् आर्य जी का आर्य समाज, सी 3, पंखा रोड, जनकपुरी, नई दिल्ली में सम्मान किया गया। इस अवसर पर आर्य वीरांगनाओं तथा गुरु विरजानंद संस्कृतकुलम, हरि नगर के विद्यार्थियों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मन्त्रोच्चारण एवं भजन प्रस्तुत किए गए।

श्री सत्यानंद आर्य जी, प्रधान, परोपकारिणी सभा, अजमेर तथा मुनि सत्यजित् आर्य जी, मंत्री, परोपकारिणी सभा, और मुनि ऋतमा जी का स्वागत पीत वस्त्रों द्वारा किया गया। सभी को शाल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के आर्य सतीश

चड्ढा, महामंत्री, संस्कृतकुलम के आचार्य धनंजय जी, वैदिक विद्वान श्री ओमप्रकाश आर्य जी, आर्य समाज पश्चिमी पंजाबी बाग के मंत्री श्री जितेंद्र बनाती जी, आर्य समाज हरी नगर के मंत्री श्री महेंद्र आर्य जी, आर्य गुरुकुल तिहाड़ गांव के प्रबंधक श्री नीरज आर्य जी तथा श्रीमती संध्या आर्य जी, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के श्री वीरेन्द्र सरदाना जी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा सरदाना जी, आर्य समाज सी पी ब्लॉक,पीतमपुरा के उपमंत्री, श्री देवेंद्र सचदेवा जी, सागरपुर से श्री मान्धाता जी, दिलशाद गार्डन से रस्तोगी परिवार, आर्य समाज जनकपुरी सी ब्लाक पंखा रोड की कार्यकारिणी सदस्य, श्रीमती प्रतिभा कटारिया जी, आर्य समाज शाहबाद मोहम्मदपुर से श्री सुधीर गुप्ता जी तथा विभिन्न गणमान्य आर्य जनों ने इस आयोजन में भाग लेकर धर्म लाभ प्राप्त किया। आर्य समाज सी 3 पंखा रोड जनकपुरी के अधिकारियों ने व्यवस्था सेवा और प्रसाद हेतु आभार।

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

प्रधान : श्री शिव कुमार मदान
मन्त्री : श्री बी. एस. सैनी
कोषाध्यक्ष : श्री विपिन कुमार

आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

प्रधान : श्री रमेश मदान
मन्त्री : श्री ज्योतिभूषण
कोषाध्यक्ष : श्री अनिल भाटिया

आर्यसमाज बैजनाथ पारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

प्रधान : श्री लक्ष्मीनारायण महतो
मन्त्री : श्री योगीराज साहू
कोषाध्यक्ष : श्री बसन्त सिंह ठाकुर

सोशल मीडिया प्रबंधक चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सोशल मीडिया विभाग/आर्यसन्देश टीवी को सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे - फेसबुक, व्हाट्सएप आदि पर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार कार्य हेतु योग्य आर्य युवाओं की आवश्यकता है। योग्यता : 12वीं पास, कम्प्यूटर का साधारण ज्ञान। वेतन : योग्यतानुसार।

हिन्दी भाषा एवं वैदिक सिद्धांतों का उत्तम ज्ञान रखने वाले एवं बिना देखे टाइपिंग कर सकने वालों युवाओं को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक प्रार्थी dapsmediahead@gmail.com अपना आवेदन पत्र एवं बायोडेटा से भेजें।

-मीडिया प्रमुख

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजनाओं के लिए सहयोग/दान अब और भी आसान: QR कोड स्कैन करते ही होगा भुगतान

आपको जानकर हर्ष होगा कि बैंक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को डिजिटल पेमेंट हेतु कोड़ जारी किया गया है। अब आप किसी भी पेमेंट माध्यम - पेटीएम, फोन पे, गूगल पे, मास्टर/वीजा रुपये, भीम पे - से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित किसी भी योजना/प्रकल्प के लिए सहयोग एवं दान राशि का भुगतान केवल मात्र क्यू.आर. कोड को स्कैन करके कभी भी-कहीं से भी कर सकते हैं।

आप इस कोड के माध्यम अपने आर्यसमाज की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को देय दशांश एवं वेद प्रचार राशियों का भी भुगतान कर सकते हैं।

scan here to pay

Delhi Arya Pratindhi Sabh

MID 037111021930104 TID 78577776
ME Helpdesk: 18602332332 / 022-40426060

mastercard 512260002457893

BHIM RuPay 6100020024576951

VISA 4604901024578941

आप द्वारा इसके माध्यम से भेजी गई राशि तत्काल सभा को प्राप्त हो जाएगी। कृपया भुगतान करते ही आपके पास जो मैसेज आए उसका स्क्रीन शॉट लेकर अथवा सीधे उस मैसेज को 9540040388 पर व्हाट्एप्प अथवा टेलिग्राम कर दें, जिससे आपको तुरन्त रसीद जारी की जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री
(9958174441)

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

पृष्ठ 2 का शेष

साऊदी अरब ने तब्लीगी जमात को .....

अब जैसे ही ग्रुप का गठन हुआ तो इसका परिणाम भी सामने आया और 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रशीद नाम के जमाती ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की गोली मारकर हत्या कर दी। बताया जाता है कि गांधी जी ने मुसलमानों कि इस कट्टरता की आलोचना नहीं की और न ही उनके दोषों को उजागर किया। इसके चलते कट्टरवादी सोच वाले तब्लीगी मुसलमानों का मनोबल बढ़ता गया और हमला यहीं नहीं रुका इसके बाद 6 अप्रैल, 1929 का आक्रमण आर्य समाज के नेता महाशय राजपाल जी पर हुआ उनकी भी लाहौर में हत्या कर दी गयी।

इसके बाद तबलीग आगे बढ़ती गयी। आज तब्लीगी जमात का नाम अभी घर-घर पहुंच जाने के बाद भी उसके काम और उद्देश्य के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। पूछने पर बड़े-बड़े विद्वान और नेता भी बगलें झांकने लगते हैं, क्योंकि इसका उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है-मुसलमानों को पक्का मुसलमान बनाना खान-पान, जीवन शैली, पोशाक, मान्यताएं, भाषा, आदि सब कुछ इस्लामिक करना।

इस पर शंकर शरण जी ने लिखा है कि प्रसिद्ध विद्वान मौलाना वहीदुद्दीन खान की पुस्तक 'तब्लीगी मूवमेंट' से इसकी प्रामाणिक जानकारी मिलती है। इस जमात के संस्थापक मौलाना इलियास को यह देख भारी रंज होता था कि दिल्ली के आसपास के मुसलमान सदियों बाद भी बहुत चीजों में हिन्दू रंगत लिए हुए थे। वे गोमांस नहीं खाते थे, ममेरी, फुफेरी, चचेरी बहनों से शादी नहीं करते थे, कुंडल, कड़ा धारण करते थे, चोटी रखते थे। यहां तक कि अपना नाम भी हिन्दुओं जैसे रखते थे। हिन्दू त्योहार मनाते और कुछ तो कलमा पढ़ना भी नहीं जानते थे। यानि मुसलमान अपनी परंपराओं में आधे हिन्दू थे। इसी से क्षुब्ध होकर मौलाना इलियास ने मुसलमानों को कट्टर मुसलमान बनाना तय किया।

दिल्ली के निजामुद्दीन में इसका केंद्र बनाया गया। तब्लीगी एजेंडे को महात्मा गांधी द्वारा खिलाफत आंदोलन के सक्रिय समर्थन से ताकत मिली। इसके अलावा मौलाना इलियास को खिलाफत आंदोलन का बड़ा लाभ मिला। इससे उपजे आवेश का लाभ उठाकर उन्होंने सही इस्लाम और आम मुसलमानों के बीच दूरी पाटने और उन्हें हिन्दू समाज से अलग करने में आसानी हुई।

इलियास के बाद उनके बेटे मुहम्मद यूसुफ ने पूरे भारत और विदेश यात्राएं कीं। इसके असर से अरब और अन्य देशों से भी तब्लीगी मुसलमान निजामुद्दीन आने लगे। कोरोना के समय इसके मरकज यानी मुख्यालय से मलेशिया, इंडोनेशिया आदि देशों के कई मौलाना मिले थे।

हालाँकि मौलाना यूसुफ ने अपनी मृत्यु से तीन दिन पहले रावलपिंडी में में कहा था, 'उम्मत की स्थापना अपने परिवार, दल, राष्ट्र, देश, भाषा, आदि की महान कुर्बानियां देकर ही हुई थी। याद रखो, 'मेरा देश', 'मेरा क्षेत्र', 'मेरे लोग', आदि चीजें एकता तोड़ने की ओर जाती हैं। इन सबको अल्लाह नामंजूर करता है। राष्ट्र और अन्य समूहों के ऊपर इस्लाम की सामूहिकता सर्वोच्च रहनी चाहिए।

आज भले ही कुछ लोग तब्लीगी जमात को शांतिपूर्ण मानते हों पर यह नहीं परखते कि प्रचार किस चीज का हो रहा है? शांतिपूर्ण प्रचार और जिहाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसे जगह, समय और काफिरों की तुलनात्मक स्थिति देखकर तय किया जाता है। जमात के काम 'शांतिपूर्ण' हैं, मगर यह शांति उचित वक्त के इंतजार के लिए है, क्योंकि उनके पास अभी राजनितिक और संख्या की उतनी ताकत नहीं है। जिस दिन ये ताकत के आसपास जायेंगे, शायद तालिबान वाला हाल ना हो जाये।

लकिन अब हम तो नहीं, किन्तु साऊदी अरब अवश्य ही समझ गया है कि शांतिपूर्ण आतंक का प्रचार ही तबलीगी जमात है इसी कारण उसने अरब में इसे प्रतिबंधित कर दिया है और इसे आतंक का दरवाजा कहा है। *- सम्पादक*

8 साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 13 दिसम्बर, 2021 से रविवार 19 दिसम्बर, 2021
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 16-17/12/2021 (गुरु-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 दिसम्बर, 2021

ओ३म्

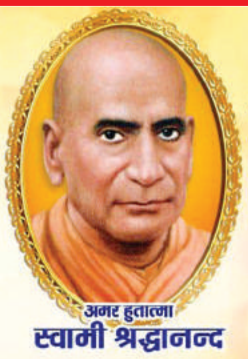

महर्षि दयानंद के अनन्य शिष्य, महान राष्ट्रभक्त, आर्य समाज के नेता, स्वतंत्रता सेनानी, अमर बलिदानी

95 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शनिवार 25 दिसम्बर 2021

कार्यक्रम

यज्ञ - श्रद्धानंद भवन	: प्रातः 10:00 बजे से
सांकेतिक शोभायात्रा शुभारम्भ	: प्रातः 11:00 बजे से
पद यात्रा - लाहोरी गेट - खारी बावली - चाँदनी चौक - स्वामी श्रद्धानंद प्रतिमा टाऊन हॉल	
आर्य समाज दिवान हॉल	: अपराह्न 12:00 बजे
भजन - नाटिका - श्रद्धांजलि	
शान्ति पाठ - लंगर	: अपराह्न 1:00 बजे

सांकेतिक शोभायात्रा बिना वाहन तथा बैनर के होगी। आपसे निवेदन है कि वाहन को घर पर ही रखकर सरकारी बस अथवा मेट्रो से आएं।

इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण आर्य संदेश टीवी पर देखें
www.AryaSandeshTV.com

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वर्ष 2022 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
bit.ly/VedicPrakashan

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु

ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु

अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह